❁ 17 सितम्बर 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❁

✺ ज्ञान-

1] मीठे बच्चे– माया को वश करने का मन्त्र है मन्मनाभव, इसी मन्त्र में सब खूबियां समाई हुई हैं, यही मन्त्र तुम्हें पवित्र बना देता है।

2] बाम्बस जब छोड़ेंगे तो ऐसे गिरेंगे जैसे ताश के पत्ते गिरते हैं। इसका मतलब यह नहीं कि वही मरेंगे बाकी दूसरे रह जायेंगे। नहीं, तो जहाँ होगा चाहे समुद्र पर हो, पृथ्वी पर हो, आकाश में हो, पहाड़ों पर हो, उड़ रहा हो..... सब खत्म हो जायेंगे। यह पुरानी दुनिया है ना। जो भी 84 लाख योनियां हैं, यह सब खत्म हो जानी हैं। वहाँ नई दुनिया में यह कुछ भी होगा नहीं। न इतने मनुष्य होंगे, न मच्छर, न जीव जन्तु आदि होंगे।

3] भक्ति को कहा जाता है रात। ज्ञान को कहा जाता है दिन। यह बेहद का की बात है।

4] इस समय सबकी बैटरी खाली है। अब बैटरी को कैसे भरना है– यह बाप के सिवाए कोई भी बैटरीी चार्ज न कर सके। बच्चों को बैटरी चार्ज करने से ही ताकत आती है। उसके लिए मुख्य है याद।

5] बाप ने समझाया है– बच्चे, तुम्हारी कर्मेन्द्रियां शान्त तब होती हैं, जब कर्मातीत अवस्था बनती हैं।

6] शिवबाबा की पूजा भी करते हैं फिर कह देते सर्वव्यापी। शिवबाबा कहते हो फिर सर्वव्यापी कैसे होगा। पूजा करते हैं, लिंग को शिव कहते हैं। ऐसे थोड़ेही कहते कि इसमें शिव बैठा है। अब पत्थर-ठिक्कर में भगवान को कहना... तो क्या सब भगवान ही भगवान हैं। भगवान अनलिमिटेड तो नहीं होंगे ना। तो बाप बच्चों को समझाते हैं, कल्प पहले भी ऐसे समझाया था।

✺ योग-

1] याद की यात्रा ही सेफ्टी का नम्बरवन साधन है क्योंकि इस याद से ही तुम्हारे कैरेक्टर सुधरते हैं। तुम माया पर जीत पा लेते हो। याद से पतित कर्मेन्द्रियां शान्त हो जाती हैं। याद से ही बल आता है। ज्ञान तलवार में याद का जौहर चाहिए। याद से ही मीठे सतोप्रधान बनेंगे। कोई को भी नाराज़ नहीं करेंगे इसलिए याद की यात्रा में कमज़ोर नहीं बनना है। अपने आपसे पूछना है कि हम कहाँ तक याद में रहते हैं?

2] याद की यात्रा से तुम बहुत-बहुत सेफ रहते हो।

3] याद का जौहर बहुत अच्छा चाहिए। ज्ञान तलवार में याद का जौहर न होने कारण किसको तीर लगता ही नहीं, पूरा मरते नहीं। बच्चे कोशिश करते हैं ज्ञान का बाण लगाकर बाप का बनायें वा मरजीवा बनायें। परन्तु मरतें नहीं, तो जरूर ज्ञान तलवार में गड़बड़ है।

4] जितना-जितना याद में रहेंगे उतना बड़े मीठे बनते जायेंगे।

✺ धारणा-

1] बाप ने समझाया है– तुम बच्चे जितना याद की यात्रा में तत्पर रहेंगे उतनी खुशी भी रहेगी और मैनर्स भी ठीक होंगे क्योंकि पावन भी बनना है। कैरेक्टर्स भी सुधारना है। अपनी जांच करनी है– मेरा कैरेक्टर किसको दु:ख देने जैसा तो नहीं है। मुझे कोई देह-अभिमान तो नहीं आ जाता हैं? यह अच्छी रीति अपनी जांच रखनी है।

2] याद की यात्रा में कमजोर नहीं बनना है।

3] तुम सतोप्रधान थे तो बहुत मीठे थे। अब फिर सतोप्रधान बनना है। तुम्हारा स्वभाव भी बहुत मीठा चाहिए। कभी रंज (नाराज़) नहीं होना चाहिए। ऐसा वातावरण न हो जो कोई रंज हो।

...2

4] कोई तो सर्जन के आगे सच बतलाते हैं, कोई छिपा लेते हैं। अन्दर में जो खामियां हैं, वह तो बाप को बतलानी पड़े। इस जन्म में जो पाप किये हैं, वह अविनाशी सर्जन के आगे वर्णन करना चाहिए, नहीं तो वह दिल अन्दर खाता रहेगा। सुनाने के बाद फिर खायेगा नहीं। अन्दर रख लेना– यह भी नुकसानकारक है। जो सच्चे-सच्चे बच्चे बनते हैं, वह सब बाप को बतला देते हैं– इस जन्म में यह-यह पाप किये हैं।

5] सिर्फ ज्ञान की प्वाइंटस् रिपीट करना, सुनना वा सुनाना ही स्वचिंतन नहीं है लेकिन स्वचिंतन अर्थात् अपनी सूक्ष्म कमजोरियों को, अपनी छोटी-छोटी गलतियों को चिंतन करके मिटाना, परिवर्तन करना– यही है स्वचिंतक बनना। ज्ञान का मनन तो सभी बच्चे बहुत अच्छा करते हैं लेकिन ज्ञान को स्वयं के प्रति यूज़ कर धारणा स्वरूप बनना, स्वयं को परिवर्तन करना, इसकी ही मार्क्स फाइनल रिजल्ट में मिलती है।

6] हर समय करन-करावनहार बाबा याद रहे तो मैं पन का अभिमान नहीं आ सकता।

✺ सेवा-

1] यहाँ कौन बैठ पढ़ाते हैं? भगवान। उनका नाम है शिव। शिवबाबा ही हमको स्वर्ग की बादशाही देते हैं। फिर कौन-सी पढ़ाई अच्छी? तुम कहेंगे हमको शिवबाबा पढ़ाते हैं जिससे 21 जन्मों की बादशाही मिलती है। ऐसे-ऐसे समझाते-समझाते ले जाते हैं। कोई तो पूरा न समझने कारण इतनी सर्विस नहीं कर सकते हैं। बन्धन की जंजीरों में जकड़े रहते हैं।